आत्मनिवेदन

यह दूसरा खण्ड खुद्दाबन्ध (क्षुल्लकबन्ध) है। इसमें कर्मका बन्ध करनेवाले सब जीवोंकी मुख्यतासे कथन दृष्टिगोचर होता है। प्रथम अधिकारमें चौदह मार्गणाओंमेंसे प्रत्येक मार्गणाकी प्राप्ति किस प्रकार होती है इसका ९१ सूत्रद्वारा विवेचन किया गया है। दूसरी प्ररूपणामें एक जीवकी अपेक्षा कालानुगमकी मीमांसा की गई है। इसमें कुल २१६ सूत्र हैं। तीसरी प्ररूपणामें एक जीवकी अपेक्षा अन्तरानुगमका विचार किया गया है। इसमें सब मिलाकर १५१ सूत्र हैं। चौथे अनुयोग द्वारका नाम भंगविचय हैं। इसमें २३ सूत्र हैं। पांचवे अधिकारको द्रव्यप्रमाणानुगम कहते हैं। यह १७१ सूत्रोंमें निबद्ध हुआ है। छठा अधिकार क्षेत्रानुगम है। इसमें १२४ सूत्र हैं। सातवें अधिकारका नाम स्पर्शनानुगम है। यह सर्वाधिक २७९ सूत्रोंमें समाप्त हुआ है। आठवा अधिकार नानाजीवोंकी अपेक्षा कालानुगम है। इसमें कुल ५५ सूत्र हैं। नौवें अधिकारका नाम नानाजीवोंकी अपेक्षा अन्तरानुगम है। यह ६८ सूत्रोंमें लिखा गया है। दसवें अधिकारको भागाभागानुगम कहते हैं। यह ८८ सूत्रों द्वारा निबद्ध किया गया है। ग्यारवां अल्पबहुत्वानुगम है। यह २०६ सूत्रोंद्वारा लिपिबद्ध हुआ है। इसके आगे सबसे अन्तमें महादण्डकका संकलन किया गया है। यद्यपि इसमें अल्पबहुत्वानुगमकी प्ररूपणाही निबद्ध है। परन्तु इसको भिन्न प्रकारसे होनेके कारण इसे महादण्डक कहा गया है। इस प्रकार क्षुल्लकबन्धके अधिकारोंका यह संक्षिप्त विवेचन है।

जब इस ग्रन्थका अनुवाद होकर कई विद्वानोंमें प्रकाशनके योग्य बनाया था तब ताड पत्रप्रतियोंके पाठ उपलब्ध नहीं थे। केवल किसी प्रकार बाहर आई हुई प्रतिसे लिपिबद्ध की गई विविध प्रतियोंके आधार पर इसका मुद्रण किया गया था। अब ताडपत्रीसे प्रतियोंके जो पाठभेद हमारे सामने हैं उनको ध्यानमें रखकर जिस प्रतिको तैयार किया जा रहा है उसी आधारपर संशोधनके साथ यह प्रति प्रकाशनके लिये सोलापुर भेजनेका उपक्रम है। इस काममें बन्धु श्री. पं. नरेन्द्रकुमारजी भिसीकर का भरपूर सहयोग मिल रहा है। इसकी हमें प्रसन्नता है। अब यहां पर उन पाठभेदोंकी सूची दी जा रही है जिस आधारपर प्रस्तुत ग्रन्थ को तैयार किया गया है। वे इस प्रकार हैं——

फूलचन्द्रजी शास्त्री